जीवन का जल

(4:1-42)

उसके जीवन के बहुत से पहलुओं से मैं हैरान होता हूं! क्या उसके गांव के लोग उसे अच्छी औरत मानते थे या वह एक ऐसी महिला थी जिससे लोग दूर रहने की कोशिश करते थे? बचपन में उसके लिए जीवन का क्या अर्थ था? क्या उसके माता-पिता उसकी युवावस्था के वर्षों में उसके प्रति दयालु थे? उसका *पहला* पति कैसा व्यक्ति था? क्या उसके इतने (पांच!) विवाह सूखार में एक कीर्तिमान था? कुएं पर यीशु से मिलने के दिन उसका व्यवहार कैसा था? क्या उसका मन और आंखें घमण्ड से भरी हुई थीं या वह झुके हुए कंधों और दुखी मन से वहां आई थी?

सामरी स्त्री के जीवन के बहुत से पहलुओं की जानकारी हमें कभी नहीं मिल पाएगी और मैं उसके जीवन में होने वाली भावनात्मक बातों के विस्तार में जाना नहीं चाहता। फिर भी, सुसमाचार की पुस्तकों में एक खोए हुए व्यक्ति से यीशु की मुलाकात सबसे बड़ी पहेली हो सकती है। एक दिन वह पानी लेने के लिए कुएं पर गई और उन लोगों के लिए एक आदर्श बन गई जो उन शक्तियों से छुटकारा पाना चाहते हैं जो उनकी दुर्गति करती हैं। ''उड़ाऊ पुत्र'' जिसे यह नाम मुख्य रूप से मानवीय स्वभाव के कारण मिला है, की कहानी की तरह ही उसकी कहानी भी ''सामरी स्त्री'' की कहानी के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में, दोनों की ही कहानियां मुख्यत: परमेश्वर, अर्थात ऐसे परमेश्वर की हैं जो अपने बच्चों का अपने पास वापस आने पर स्वागत करता है और सबसे दुष्ट लोगों पर भी अपना प्रेम बरसाता है। ''सामरी स्त्री'' की कहानी विश्वास का अध्ययन भी है और यूहन्ना ने यीशु और इस स्त्री में हुई बातचीत का इस्तेमाल यूहन्ना रचित सुसमाचार में विश्वास के बारे में उन तीन महत्वपूर्ण सच्चाइयों को बताने के लिए किया, जिन्हें वह लोगों को बताना चाहता था।

विश्वास परिस्थितियों से ऊपर है

करीब दोपहर का समय होगा जब यीशु और उसके चेले यहूदिया से गलील को जाते समय मार्ग में याकूब के कुएं पर रुके थे। यह प्राचीन स्थल सूखार के सामरी नगर के निकट ही था। यह जानकर कि बाज़ार से भोजन मिल सकता है, वे वहां आराम करने के लिए रुक गए थे। थका होने के कारण यीशु खाने के लिए कुछ खरीदने गए चेलों की प्रतीक्षा करने के लिए कुएं के पास बैठ गया। यीशु के वहां बैठे ही , एक सामरी स्त्री पानी भरने आई। आदर्श

रूप में, महिलाएं कुएं के पास बैठे थके हुए किसी यहूदी से बात किए बिना ही पानी लेकर वापस चली जाती थीं। परन्तु, इस अवसर पर इस स्त्री के साथ कुछ अजीब बात हुई, क्योंकि इस यहूदी ने उससे बात की! यीशु ने उससे केवल पानी ही मांगा था, परन्तु इस छोटी सी बिनती से वह चौंक गई और उससे कहने लगी, ''तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है?'' (4:9)। इस प्रकार यीशु और पास के नगर की इस महिला के बीच जीवन बदलने वाले वार्तालाप की शुरुआत हुई।

अगले कुछ पलों में यीशु ने उसकी सबसे बड़ी आवश्यकताओं, उसकी सबसे बड़ी चिन्ताओं और मसीहा (मसीह) के रूप में अपनी पहचान के बारे में बात की! अन्त में केवल उसने ही नहीं बल्कि उसके नगर के बहुत से दूसरे लोगों ने भी यीशु पर विश्वास किया। इसमें अविश्वसनीय बात यह है कि मानवीय परिप्रेक्ष्य में यीशु के लिए सुसमाचार को बताने वाली स्त्री पूरे संसार में सबसे अधिक अप्रिय हो सकती है। यीशु ने स्पष्ट बताया कि विश्वास किसी की परिस्थितियों से बन्धा हुआ नहीं है। यदि बन्धा हुआ होता तो यह स्त्री कभी भी विश्वासी न बनती, क्योंकि उस समय उस पर कम से कम तीन कमियां थीं।[1]

पहली कमी: वह एक सामरी थी

यहूदियों और सामरियों में एक दूसरे के प्रति कटुता लगभग सात सौ वर्ष पूर्व इस्राएलियों की दासता के समय शुरू हुई थी। वहां रहने वाले अधिकतर लोगों ने दूसरी जाति के लोगों से विवाह कर लिए थे जिससे इस्राएल की संतान के रूप में उनकी आत्मिक और सांस्कृतिक पहचान में मिलावट आ गई थी। बाबुल के यहूदियों ने मन्दिर को फिर से बनाने के लिए यरूशलेम में लौटकर यहां रहने वाले अपने सम्बन्धियों से हर प्रकार का मेल-मिलाप रखना छोड़ दिया था।[2]

निकाले गए सामरियों ने गिराजीम पर्वत पर जिसे पुराने नियम में आशीष का पर्वत कहा गया था, अपना मन्दिर बना लिया था। दोनों गुट एक-दूसरे पर बहुत संदेह करते थे तथा 128 ई. पू. में यहूदियों के एक गुट ने सामरियों के मन्दिर को जला दिया था। सामरियों के लिए यहूदी धर्म-गुरुओं के मन में पाई जाने वाली घृणा के कारण इस दुखद घटना का होना कोई आश्चर्य नहीं है। मिशनाह में कहा गया है, ''सामरियों की लड़कियां पालने से ही अशुद्ध होती हैं।''[3] अन्य शब्दों में, सामरियों की स्त्रियों को स्वभाव से ही अशुद्ध माना जाता था! मिशनाह में रब्बी एलियेज़र की बात भी शामिल की गई है कि ''सामरियों की रोटी खाना सूअर का मांस खाने के समान है।''[4] NIV के कथन का अनुवाद इस प्रकार है कि ''यहूदी लोग सामरियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे'' जिसका अर्थ सम्भवत: यह है कि ''यहूदी लोग सामरियों के बर्तन में नहीं खाते थे'' या, जैसा कि NRSV में है, ''यहूदी लोग सामरियों के साथ कुछ भी साझा नहीं रखते हैं।'' ऐसी पृष्ठभूमि होने पर, यीशु का किसी सामरी स्त्री से बात करना आश्चर्यजनक था। यीशु द्वारा उसके मटके से पानी पीने की बात चौंकाने वाली है उसने उससे परमेश्वर के ''जीवन का जल'' देने की पेशकश करना तो अविश्वसनीय है!

दूसरी कमी: वह एक स्त्री थी

नगर से भोजन खरीदकर लौटे चेले ''अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है'' (4:27)। उनके अचम्भे का कारण यह विशेष स्त्री नहीं थी; बल्कि उन्हें तो इस बात पर हैरानी हो रही थी कि वह किसी स्त्री से बात कर रहा है! चेलों को यीशु द्वारा किसी सामरी से बात करना तो बुरा लगना स्वाभाविक था, परन्तु वापस आने पर उसे किसी सामरी *स्त्री* से बात करते देखने की कल्पना करना भी कठिन था।

एक बार फिर, रब्बियों की शिक्षाएं सामरी स्त्री के विरुद्ध थीं। तालमुड में एक रब्बी को अपने श्रोताओं को स्त्रियों से, यहां तक कि अपनी पत्नी से भी अधिक बात न करने का सुझाव देते बताया गया है![5] व्यवस्था के कुछ शिक्षक स्त्री को नैतिक रूप से निम्न स्तर का मानते थे, और एक पुरानी प्रार्थना थी, ''धन्य है तू, हे यहोवा, जिसने मुझे स्त्री नहीं बनाया।'' स्त्री होना इस महिला की दूसरी कमी थी।

तीसरी कमी: उसका अतीत दागदार था

बातचीत के दौरान, यीशु ने संकेत दिया कि उसे सामरी स्त्री के अतीत के दुखद रहस्य मालूम थे। उसने पांच शादियां की थीं और वर्तमान में जिस आदमी के साथ वह रह रही थी वह भी उसका अपना पति नहीं था (4:18)। उसके नाकाम वैवाहिक सम्बन्धों में आने वाले संघर्ष, ठुकराए जाने, असुरक्षा, लज्जा तथा पीड़ा की कल्पना करना हम पर छोड़ दिया जाता है। कुएं पर आने के समय शायद उसने वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ दिया था या शायद वह अकेली थी कि कोई आदमी उसे अपना नाम देकर सम्मान देने को तैयार नहीं था।

मेरे बहुत से ऐसे मसीही मित्र हैं जिन्होंने तलाक के संताप को झेला है। उनमें से कोई भी तलाक नहीं चाहता था, और बहुतों ने तो अपने वैवाहिक सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया था। उन सबको फिर से अचानक ''एक तन'' के दो टुकड़े हो जाने का संताप झेलना पड़ा और बीसवीं शताब्दी के अन्त में भी तलाक से मिलने वाले दाग का अनुभव है। मैंने देखा है कि तलाक लेने वाले मसीह में मेरे भाई और बहनें तलाक न करने वालों से भी अधिक इस शब्द से घृणा करते हैं। अपने जीवनों में तलाक के विनाश को देखने के कारण उन्हें समझ आ गई कि परमेश्वर तलाक से घृणा क्यों करता है (मलाकी 2:16)। बहुतों के तो वर्षों बाद भी तलाक के भावनात्मक दाग अभी तक नहीं मिट पाए हैं। उस सामरी स्त्री के *पांच* बार हुए तलाक से मिलने वाले दागों की कल्पना कीजिए![6]

जैसे बेसबॉल में कहा जाता है, ''तीन स्ट्राइक लेने के बाद आप आउट हो गए!'' क्या विश्वास के लिए यीशु को कहीं और जाकर इससे अधिक असम्भावित व्यक्ति मिल सकता है? यदि वह एक भली सामरी स्त्री के रूप में कुएं पर आती तो स्थिति बहुत ही कठिन हो जानी थी। उसके कष्टदायक अतीत तथा घिनौने वर्तमान के कारण ही यीशु ने सुसमाचार को ग्रहण करने के लिए उसे चुना।

यीशु तथा उस सामरी स्त्री की बातचीत से पता चलता है कि विश्वास किसी की परिस्थितियों से बंधा हुआ नहीं है। परमेश्वर की नज़र में, किसी की जाति, राष्ट्रीयता, लिंग

या अतीत किसी भी तरह कोई मुद्दा नहीं है। कुएं पर होने वाली बातचीत से यह बहुत ही अच्छी तरह समझ आता है!

विश्वास व्यवहार से बंधा हुआ है

यीशु ने उस स्त्री से अपनी बातचीत के निर्णायक मोड़ पर, जाकर अपने पति को लाने के लिए कहा। उसके यह कहने पर कि उसका तो कोई पति ही नहीं है, यीशु ने कहा, ''तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति के हूं। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है'' (4:17, 18)। पहले तो लगता है कि बहुत ही गहरे आत्मिक वार्तालाप में यह एक पवित्र रुकावट है। यीशु ने ''जीवन का जल'' की बातें करते-करते उसे अपने पति को लाने के लिए क्यों कहा? उस स्त्री के उत्तर और उसे यीशु के जवाब से संकेत मिलता है कि यीशु चाहता था कि उसे केवल उत्तेजित होकर ही नहीं, बल्कि पूरे मन से प्रभु के पास आना चाहिए। अपने व्यक्तिगत जीवन का फिर से अवलोकन किए बिना, उसका विश्वास एक धोखा होना था।

विश्वास परिस्थितियों से तो बंधा हुआ नहीं है, परन्तु हमारे लिए अपने विश्वास को अपने व्यवहार से जोड़ना बहुत ही आवश्यक है। हो सकता है कि कोई यीशु में विश्वास व्यक्त करके भी उसे अपने जीवन में न आने दे। विश्वास के मार्ग की तलाश करने वाले के लिए ज़रूरी है कि वह अपना पूरा जीवन प्रभु को दे दे। आपने उन सिपाहियों के बारे में तो सुना होगा जिन्होंने किसी सेना में जो ''मसीही'' थी, युद्ध लड़ा था। सिपाहियों को बपतिस्मा लेने के समय अपने दाहिने हाथ पानी से बाहर रखने पड़े थे। इस प्रकार वे यह कहते हुए कि ''इस हाथ ने बपतिस्मा नहीं लिया'' युद्ध में अपने दाहिने हाथों से जो कुछ भी अच्छा लगा, करते रहे! इस स्त्री से यीशु के प्रश्न का यह भाव था कि प्रभु को देना चाहती है तो वह पूरा जीवन दे दे वरना कुछ नहीं।

नये नियम में बहुत बार वास्तविक विश्वास और आज्ञाकारिता को जोड़ा गया है। मत्ती 7:21 में यीशु ने कहा, ''जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' कई साल बाद याकूब ने लिखा कि ''विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (याकूब 2:17)। विश्वास और आज्ञा मानने को अलग नहीं किया जा सकता। सामरी स्त्री यीशु को अपने जीवन के हर क्षेत्र में आने की अनुमति दिए बिना वास्तविक विश्वास में नहीं आ सकती थी।

यीशु द्वारा उस स्त्री से अपने पति को लाने को कहना आज आपको और मुझे अपनी चैक बुक, टैक्स की रिटर्न, डायरियां या अपने बैंक खाते दिखाने के लिए कहने की तरह है। विश्वास हमारे जीवनों का एक पहलू नहीं है बल्कि इसमें हमारे सम्पूर्ण जीवन शामिल हैं। यीशु ने इस स्त्री को उसके अतीत के कारण राज्य के लिए अयोग्य नहीं ठहराया, बल्कि उसने ज़ोर देकर कहा कि वह उसे अपना संपूर्ण जीवन सौंप दे। उसने उसे अपने पापमय अतीत को छोड़कर नये सिरे से आरम्भ करने के लिए कहा। विश्वास को, हमारे जीने के ढंग

से अलग कर देने पर, विश्वास नहीं कहा जाएगा!

विश्वास सच्ची आराधना में व्यक्त किया जाता है

यीशु द्वारा उस स्त्री से अपने पति को लाने के लिए कहने पर, लगता है कि उनकी बातचीत बड़ी घुमावदार हो रही थी फिर भी जैसा कि हमने देखा, ऐसा हुआ नहीं। इसके बाद उस स्त्री ने कहा, ''हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहां आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है'' (4:20; ROV)। लगता है कि वह यीशु को एक धार्मिक विवाद में उलझाकर अपनी व्यक्तिगत स्थिति से उसका ध्यान हटाने का प्रयास कर रही थी। परन्तु यीशु ने उसे परमेश्वर के पास लाने के लिए उसके ही प्रश्न का इस्तेमाल किया।

पहली बात, यीशु ने उसे बताया कि सच्ची आराधना के लिए किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं है, चाहे वह स्थान यरूशलेम या गिराजीम पर्वत ही क्यों न हो। उसका कहने का अभिप्राय यह नहीं था कि गिराजीम पर्वत भी यरूशलेम की तरह ही अच्छा था, क्योंकि उसने स्पष्ट किया कि ''उद्धार यहूदियों में से है'' (4:22)। ''परन्तु'' उसने ऐलान किया कि, ''वह समय आ रहा है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधना करने वालों को ढूंढ़ता है'' (4:23; ROV)।

बाद में यीशु ने उसे समझाया कि आराधना में स्थान का कोई महत्व नहीं है। जल्दी ही यरूशलेम और गिराजीम पर्वत दोनों ही अप्रासंगिक हो जाने थे। सच्ची आराधना आत्मा (पुरानी वाचा की आराधना की शारीरक विधियों के विपरीत) और सच्चाई से (पुरानी वाचा की परछाई के विपरीत) होती है।[7] इस प्रश्न पर, उस सामरी स्त्री की धारणा भी कभी बारह चेलों की तरह ही गलत रही होगी। यीशु, उस आराधना को एक निश्चित स्थान से निकालकर सच्ची आराधना का ढंग बता रहा था। परमेश्वर के आत्मिक स्वभाव के कारण सच्ची आराधना आत्मा से होनी आवश्यक है।

जॉन किलिंगर ने रिटायरमेंट के निकट पहुंचे एक बुजुर्ग प्रचारक से अपनी बातचीत के बारे में बताया। कलीसिया के उस भव्य भवन के पास से गुज़रते हुए जिसमें वह बूढ़ा आदमी प्रचारक था, किलिंगर ने उससे उसके जीवन के उस समय पर उसके विचार पूछे। उसके उत्तर में उसके साधारण विचारों में से, एक प्रेम के बारे में था:

> ''प्रेम से मेरा भाव यह है,'' कहते हुए उसने गत पांच वर्ष में बने कलीसिया के विशाल भवन की ओर हाथ फैलाया। ''मुझे लगता था कि इस भवन का निर्माण होने के बाद काम खत्म हो जाएगा। तुमने पुरानी इमारत तो देखी ही है। अब जबकि यह इमारत बन गई है, तो मैं प्रेम के विषय पर बहुत विचार करता हूं। यदि लोग ही न बदलें तो इतने शानदार भवन बनाने का क्या लाभ होगा? मैं अपनी

सेवकाई का बाकी हिस्सा लोगों को प्रेम करना सिखाने में बिताना चाहता हूं। यदि वे नहीं सीखते ...'' उसके शब्दों में एक दूसरी ओर अर्थात कुछ निराशा का संकेत था, जैसे शानदार भवन निर्माता के रूप में उसकी सफलता किसी तरह उसकी इतनी देर बाद की गई खोज से कि हर बात का लक्ष्य प्रेम ही है, बुरी तरह से खत्म हो गई हो।[8]

बहुत सी बातें धर्म से जुड़ी होती हैं जबकि कुछ बातें दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। दूसरे सब मुद्दों से बढ़कर विश्वास, आराधना तथा प्रेम का महत्व अधिक है। यीशु ने सच्ची अर्थात आत्मिक आराधना की ओर ध्यान दिलाते हुए एक ज़रूरतमंद और उलझन में पड़ी सामरी स्त्री का ध्यान उस ओर दिलाया जिसका महत्व जीवन में सबसे अधिक है। उसकी तुलना में दूसरी बहुत सी बातों जैसे मन्दिर और पवित्र पर्वत का कोई महत्व नहीं रहता।

सारांश

आराधना के विषय में यीशु की बातें करने के बाद, सामरी स्त्री ने फिर से विषय को बदलना चाहा। ''मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आने वाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा'' (4:25)। यीशु ने फिर कुछ चौंकाने वाली और कुछ ऐसी बात की जिसका वर्णन सुसमाचार की पुस्तकों में बहुत ही कम किया गया है। उसने उसे स्पष्ट बताया कि वह कौन है! ''मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं'' (4:26)। यह प्रकाशन उसने याजकों या राजाओं पर नहीं बल्कि एक कलंकित कही जाने वाली सामरी स्त्री पर किया! यीशु ने उसके मन में राज्य के बीज के लिए उपजाऊ भूमि देखी, सो उसने उसे परमेश्वर का वचन सुना दिया।

अन्त में, आप और मैं यीशु के साथ कुएं पर खड़े हैं। अपनी उलझन, अपनी आशाएं, अपने अतीत और अपनी वेदना को लेकर हम परमेश्वर के पुत्र के सामने खड़े हैं। हम उसकी बातें सुनकर कि (1) विश्वास परिस्थितियों से ऊपर है, (2) विश्वास व्यवहार से जुड़ा हुआ है और (3) विश्वास सच्ची आराधना में व्यक्त किया जाता है, समझने की कोशिश करते हैं।

यीशु ने जैसे सामरी स्त्री को विश्वास के मार्ग पर चलने के लिए कहा वैसे ही वह आज आपको और मुझे भी चलने के लिए कहता है!

पाद टिप्पणियां

[1]बेसबॉल के खेल में, एक खिलाड़ी तीन स्ट्राइक [अर्थात प्रहार] ले लेने के बाद (बॉल को हिट करने का असफल प्रयास), ''आउट'' हो जाता है; अर्थात उसका अवसर समाप्त हो जाता है। [2]एज्रा 4:2-5. [3]एम. Niddah 4:1. तालमुड का भाग मिशनाह, यहूदियों की परम्परागत मौखिक व्यवस्था का लिखित संस्करण है। यहूदी परम्परा के अनुसार इसका आरम्भ मूसा के समय हुआ था (1200 ई. पू.) और इसे याद किया जाता था

ताकि इसे एक से दूसरी पीढ़ी तक आगे सौंपा जाए। 70 से 200 ईस्वी में इसे लिखित रूप में बनाया गया था। [4]Mishnah Shebiith 8:10. [5]TB Ab. 1:5. तालमुड यहूदी धार्मिक तथा सरकारी नियमों के लिखित संग्रह को कहा जाता है। इसके दो भाग हैं: मिशनाह, जिसमें परम्परागत यहूदी मौखिक व्यवस्था के पद हैं और गेमारा, जिसमें उन नियमों से सम्बन्धित विद्वानों की व्याख्याएं तथा तर्क-वितर्क हैं। [6]सम्भव है कि उसके कुछ पति मर गए हों। परन्तु संदर्भ से संकेत मिलता है कि विवाह तलाक के कारण टूटे थे। [7]देखें जेम्स डी. बेल्स, इंस्ट्रूमेन्टल म्यूज़िक एण्ड न्यू टैस्टामेंट वरशिप (सरसी, आरकैंसा: जेम्स डी. बेल्स, 1973) 15-30. [8]जॉन किलिंगर, *क्राइस्ट इन द सीज़न्स ऑफ़ मिनिस्ट्री* (वाको, टैक्स.: वर्ड बुक्स, 1983), 67.

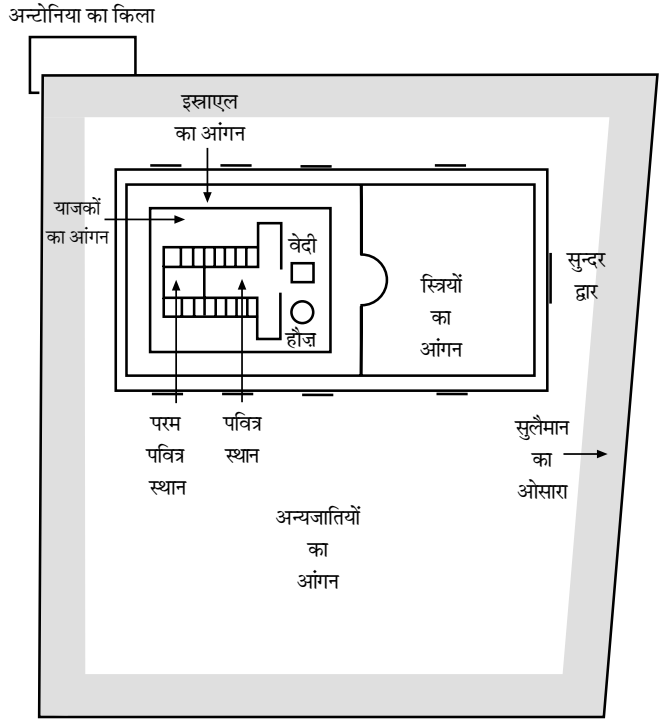

मन्दिर का एक रेखाचित्र